[Pargine *, Vol.5 (Iss.3): March, 2017]
ICV (Index Copernicus Value) 2015: 71.21

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
IF: 4.321 (CosmosImpactFactor), 2.532 (I2OR)
InfoBase Index IBI Factor 3.86

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

कुमाऊँ की जागर गाथाओं का सांगीतिक विवेचन

जगमोहन परगाँई [*1]
[*1]संगीत, शोध छात्र, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.439968

सारांश

आदिकाल से ही उत्तराखण्ड तपस्वियों की साधना स्थली माना गया है तथा पुराणकारों ने हिमालय को नेपाल, कुर्मांचल, केदार, जलन्धर और कश्मीर पाँच खण्डों में विभाजित किया है। उत्तराखण्ड इस पूरे क्षेत्र का मध्वर्ती भू–भाग है। पौराणिक भूगोल में कुर्मांचल को 'मानसखण्ड' और गढ़वाल को 'केदारखण्ड' नामों से अभिहित किया गया हैं।

उत्तराखण्ड असंख्य लोक देवी–देवताओं की आराधना स्थली के नाम से भी जाना जाता है। कुमाऊँ में स्थानीय देवी–देवताओं का विशेष महत्त्व है। यहाँ की पृष्ठभूमि जिन स्थानीय दवी–देवताओं से निर्मित हुई है उन्हें कुल देवता, ईष्ट देवता, ग्राम देवता कहा जाता है। इन पर यहाँ के जनमानस का अटूट विश्वास व अपार आस्था परिलक्षित होती है ये लोक देवता जहाँ अन्याय से क्रोधित होने पर अनेक प्रकार की पीड़ाओं, दुखों, संकटों तथा विपत्तियों को जन्म देने की सामर्थ्य रखते हैं वही दूसरी ओर प्रायश्चित व नियमित पूजा–अनुष्ठान के द्वारा प्रसन्न किए जाने पर सब प्रकार की समृद्धि एव सुख प्रदान कर देते हैं। अतः यहाँ स्थानीय जागर गाथाओं के आधार पर देवताओं का आवाह्न/अवतरण करने के लिए 'जागर' लगाने की प्रथा है। जागर द्वारा किसी उद्‌देश्य की प्राप्ति, अनिष्ट से रक्षा, रोग–व्याधि से मुक्ति एवं सुख–शांति हेतु अनेक प्रकार की गीत, गाथाएँ गाई जाती हैं। वेदना प्रधान इन जागर गाथाओं में कुमाऊँ की प्रथा, परम्परा, समाज, संस्कार, धर्म, दुख–दर्द, रूढिवादिता, सामाजिक समस्याओं का वास्तविक ज्ञान भी आसानी से हो जाता है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्‌देश्य जागर गाथाओं के सांगीतिक स्वरूपों का विश्लेषण कर उन्हें प्रकाश में लाना है।

मुख्य शब्दः कुमाऊँ, जागर, जगरिया, डगरिया, जागर गान, जागरण, आह्‌वान,।

Cite This Article: जगमोहन परगाँई. (2017). "कुमाऊँ की जागर गाथाओं का सांगीतिक विवेचन." *International Journal of Research - Granthaalayah,* 5(3), 280-286. https://doi.org/10.5281/zenodo.439968.

1. भूमिका

उत्तराखण्ड में लोकगीतों की तरह ही लोकगाथाओं का अपार भण्डार है, किन्तु आज लोकगाथाएँ, लोकगीतों की तुलना में किसी जाती–विशेष या अनुष्ठान–विशेष की धरोहर बनकर रह गई हैं। लोकगाथाओं से ही

जागर गाथाएँ उत्पन्न हुई हैं, इनमें धार्मिक पौराणिक जागर गाथाएँ पूजा–जागर के अवसर पर जगरिया और डँगरिये (विशेष व्यक्ति) के द्वारा किसी अनिष्टकारी शक्ति के मनौती के लिए देवता का आह्वान करने के लिए गाई जाती है।

जागर गाथाएँ अपने आप में कुमाऊँनी समाज की अपनी एक खास विशिष्टता कही जा सकती है। जागर गाथाओं में कुमाऊँ के स्थानीय देवी–देवताओं का आह्वान परिवार के किसी व्यक्ति के रूग्ण होन या रोग–व्याधि से मुक्ति, अनिष्ट से रक्षा, एवं सुख–शांति हेतु तथा कृषि या पशुसम्पत्ति पर संकट आने पर लोकगायक या गाथा गायक (जगरिया) द्वारा अपने गायन के अंदाज में स्वरों का व्याख्यात्मक भाषा में उतार–चढ़ाव, लोक वाद्य हुड़का, थाली या ढोल, दमुवा की तरंगित करने वाली संगीत की लय और ताल से जो जागर गाथाएँ गाई जाती हैं जिसे ''जागर'' कहा जाता है।

उत्तराखण में लोक साहित्यकारी चरित्रों, अतिमानवीय अथवा उपद्रवीय चरित्रों, पारिवारिक पूर्व पुरूषों के सम्बन्ध में समाज में व्याप्त दैवीय विश्वास स्पष्ट परिलक्षित किए जा सकते हैं। कुमाऊँनी समाज में एक तरफ जहाँ दैवीय शक्ति के रूप में कुछ लोकहितकारी मिथकों की अभ्यर्थना प्रचलित है वहीं दूसरी तरफ कुछ विघटनकारी तथा अतिमानवीय चरित्रों की 'जागर' भी प्रचलित है। कुमाऊँ में प्रचलित जागर गाथाओं की संख्या लगभग 50 से ऊपर प्राप्त होती हैं।

कुमाऊँ क्षेत्र में प्रमुख रूप से जागर गाथाऐं गुरू गोरखनाथ देवता, गंगनाथ देवता, हरू, सैंम देवता, ऐड़ी, ग्वाल देवता, आदि की गाथाऐं 'जागर' के माध्यम से विशेष व्यक्तियों द्वारा गाई जाती हैं

जागर – शाब्दिक अर्थ, रूवरूप एवं सम्पादन, प्रक्रिया और लोक वाद्य

शाब्दिक अर्थ – ''जागर'' शब्द संस्कृत का है। जिसका शाब्दिक अर्थ है– जागना या जगाना। जागर में जगरिया (गाथागायक) देवता का अवतरण करता है, इसलिए उद्बोधन या चेतन कराने के अर्थ में भी जागर शब्द अर्थसंगत प्रतीत होता है। इस प्रकार ''जागर'', जागरण और उद्बोधन दोनों अर्थों की प्रतीति कराता है। देवी–देवताओं को प्रसन्न करने या प्रेतबाधा निवारण हेतु रात्रि जागरण करके जो गाथाएँ गाई जाती हैं और जिनके गाने से देव विशेष चेतन होता है, उन्हें **जागर** कहते हैं।''**(पोखरिया, 1994, पृ0 63)**[1]

''विभिन्न देवी–देवताओं के जागर हमारे घरों में लगते रहते हैं, जागर शब्द जागरण का कुमाऊँनी उच्चारण का रूप है, जिसका तात्पर्य एक अदृश्य आत्मा को जागृत कर उसका आह्वान कर उसे किसी व्यक्ति (जिसे माध्यम कहा जा सकता है) के शरीर में अवतरित करना है ''जागर'' कहलाता है।'' **(पेटशाली, 2002, पृ0 57)2**

''देवी–देवता अथवा प्रेतबाधा निवारण हेतु रात्रि जागरण करके जो गाथाएँ गायी जाती हैं और जिनके गाने से देव विशेष चेतन होता है, उन्हें जागर कहते हैं'' **(पोखरिया, 1994 पृ0 69)**3

''जागर शुद्ध संस्कृत शब्द है। कालिदास के रघुंश (रात्रिनागरहरो दिवाशयः 9/34) और महाभारत के जागर पर्व प्रसंग में इसका उल्लेख आया है। रात्रि में जागरण कर अथवा किसी माध्यम के ऊपर दैवी शक्ति को जाग्रत करने के लिए गाये जाने वाले गीत सामान्यतः जागर कहलाते हैं।'' **(चातक, 1990, पृ0 245)**4

जागर : प्रक्रिया और प्रकार – जागर गान जागर प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण अंग होता है जिसमें जगरियों द्वारा आवाह्न, उद्बोधन तथा अवतरण के लिए उसका गुणगान किया जाता है जिसे जागरी भाषा में 'विनती' करना कहा जाता है। इसमें देवता विशेष की जीवनी से सम्बद्ध तथ्यों एवं जगरियों द्वारा जोड़े गये अन्यान्य

प्रक्षेपों का एक अद्‌भुत संपुटीकरण होता है, जो कि जगरिये की कल्पनाशक्ति के आधार पर विभिन्न रूप धारण करता रहता है। इसीलिए जागर गाथाअें में विभिन्न देवताओं से सम्बद्ध गाथाओं के विभिन्न कथात्त्व पाये जाते हैं। **(शर्मा, 2011, पृ0 68)5**

प्रायः जागर नृत्यमयी उपासना के साथ देवता या अनिष्टकारिणी शक्ति की मनौती के लिए आयोजित किए जाती हैं। जागर गाथाएँ सामान्यतः दैवी शक्ति के आह्‌वान तथा माध्यम को देवता के रूप में जागरी पुरोहित (जिसे डँगरिय कहा जाता है) अथवा आवजी–वादक (जिसे जगरिया कहा जाता है) द्वारा गाई जाती है। जागर विशेषकर खुशी के अवसर पर या विपत्ति, रोग आदि के निवारण हेतु आयोजित किया जाता है। देश के विभिन्न क्षेत्रों की तरह कुमाऊँनी लोक जीवन में भी आदिकाल से यह मान्यता है कि स्थानीय देवी–देवताओं की पूजा करने से मन्नत पूरी होती है या विपत्ति हल हो जाती है। यहाँ समूचे कुमाऊँ में स्थान–स्थान पर स्थानीय देवी–देवताओं के थान (मंदिर) पाये जाते हैं। प्रत्येक गाँव व परिवार के अपने अलग–अलग देवी–देवताओं व उनके थान (मंदिर) भी होते हैं।

जागर में मुख्य लोक गायक 'जगरिया' के साथ दो या दो से अधिक 'भगार' या 'ह्योवार' सहगायक होते हैं। कुमाऊँ में जागरगाथा दो–दो व्यक्तियों के दलों में विभक्त होकर 'फाग' के रूप में गायी जाती है जिसमें एक दल 'फगार' तथा दूसरा 'भगार (जागर में जागर गाथा को गाने वाले प्रमुख गायक के साथ गाने वाले सहगायकों को 'भगार' या 'ह्योवार' कहा जाता है) कहलाता है।

जागर गाथाओं में, देवत्व के अवतरण के लिए गाथा का रूप गद्यात्मक हो जाता है और 'भगारे–भाग लगाना छोड़ देते हैं। भगारों का स्थान वाद्य ध्वनियां ले लेती हैं। देवता का अवतरण हो जाने पर गाथा का गद्यात्मक रूप भी छूट जाता है और मात्रा बाजों की तालों में देवता नृत्य करता है। **(जोशी, 1973, पृ0 10)6**

जागर में जागार गाथाओं का गान करने वाले तथा करवाने वाले तीन प्रमुख व्यक्तियों का जागर में उनकी भूमिका का परिचय देना आवश्यक होगा। जागर के मुख्य पात्र (तीन प्रमुख व्यक्ति) निम्न हैं।

1. **जगरिया** – जगरिया उस व्यक्ति को कहा जाता है जो लोक देवी–देवता की अदृश्य आत्मा, को जागृत करता है। इसका कार्य देवता की जीवनी, उसके जीवन की प्रमुख घटनाएं व उसके प्रमुख मानवीय गुणों का लोक वाद्यों के साथ एक विशेष गायन शैली में गाकर देवता को जागृत करे उसको डँगरिया के शरीर में अवतार कराना है। जगरिया को औजी, दास (देवसेवक) 'गुरू' भी कहा जाता है। उल्लेख्य है कि असवर्ण होने पर भी जागर के संदर्भ में दास या डंगरिया अछूत नहीं रहता, वह सवर्ण वाद्यवादक अथवा सवर्ण डँगरिये/पश्वा के समान ही पूज्य होता है। देवशक्ति में प्रभावित ब्राह्मण डंरिया भी उसे 'भाई' कह कर सम्बोधित करता है, और उसे गले लगाता है।

2. **डँगरिया** – यह वह व्यक्ति होता है जिसके शरीर में लोकदवेता का अवतार या अवतरण कराया जाता है। लोकदेवता का अवतरण स्त्री, पुरूष दोनों के माध्यम से होता है। अवतार के समय उस व्यक्ति (डँगरिया) को उसी देवता के समान शक्ति सम्पन्न व सर्वफलदायी माना जाता है। वही दुखी व्यक्ति को उसकी समस्या के समाधान की डगर (रास्ता) बताता है। इसीलिए उसे जागर की भाषा में डँगरिया कहा जाता है। डँगरिया के लिए धामी/पस्वा/धानी, माली, औतारू (गढ़) शब्द का प्रयोग किया जाता है। डँगरिये को अपने आचरण एवं खान–पान में अनेक विधि–निषेधों का अनुपालन करना होता है।

3. **स्योंकार–स्योंनाई** – जिस घर में जागर, जागा बैसी लगाई जाती है उस घर के सबसे बुर्जुग एवं उसकी पत्नी को क्रमशः स्योंकार–स्योंनाई के नाम से पुकारा जाता है। जिस समय जागर अथवा बैसी में देवता का अवतरण होता है, कई दुःखी एवं समस्याग्रस्त पुरूष एव स्त्री अपने शंका समाधान, दुख का

निवारण एवं उसके हल की कामना से अपने घर से कुछ चावल देवता की थाली में रखते हैं। जिन चावलों को हाथ में लेकर देवता दुःखी व्यक्ति के दुःख का निवारण अपनी भाषा में बताता है। इस प्रकार जो चावल पुरूष अथवा स्त्री ने दिये हैं उनके लिए अवतरित देवता क्रमशः स्योंकार एवं स्योंनाई शब्द ही इस्तेमाल करता है।

''मोण्टेनियर (ए समर रैम्बल दन द हिमालयाज, पृ, 187—88) के अनुसार 'परिवार के किसी व्यक्ति के रूग्ण होने अथवा कृषि या पशुसम्पत्ति पर कोई असामान्य संकट आने पर यदि साधारण उपचारों से लाभ नहीं पहुंचता है तो कुपित ग्राम देवता का पता लगाने के लिए 'पुछेर' (बाक्की)/गणतुआ से पूछा जाता है। पुछेर कुपित देवता का नाम, उसके कुपित होने का करण तथा उसे सन्तुष्ट करने के उपाय बतलाता है। तब जगरियों के जोड़े को बुलाया जाता है। वे विपत्तिग्रस्त व्यक्ति के या उसके पड़ौसी के डण्डयाले में बैठ कर कुपित ग्राम देवता को प्रसन्न करने के लिए कुमाऊँनी बोली में घड़याला (जागर) सुनाते हैं। यदि कोई व्यक्ति, पस्वा/डंगरयि कांपने लगाता है तो किसी कटोरी में जलते हुए अंगारों पर घी डाल कर उससे उठने वाले धुंए को उसे सुघांया जाता है (कुमाऊँ में उस पर 'शुचि' (गोमूत्र) छिड़का जाता है) इस धूप को सूघंते ही वह व्यक्ति सहसा उछल कर खड़ा होकर नाचने लगता है। विश्वास किया जाता है कि उस व्यक्ति पर ग्रामदेवता आविष्ट हो गया है। इस पर जागरी, व्यथित व्यक्ति द्वारा किये गये अपराधों के लिए उससे क्षमा याचना करते हुए उसे कथनानुसार यथेष्ट रूप में उसे सन्तुष्ट किये जाने का आश्वासन देता है।'' **(शर्मा, 2011, पृ053)7**

देवसिंह पोखरिया के अनुसार— विषय वस्तु के आधार पर जागर में तीन भेद किये जा सकते हैं।

1. भूत—प्रेत सम्बन्धी जागर
2. देवी देवताओं सम्बन्धी जागर
3. स्थानीय राजवंशों सम्बन्धी जागर

1. **भूत—प्रेत सम्बन्धी जागर —** इसमें किसी व्यक्ति विशेष के शरीर में भूत या देवता का अवतरण होता है वह अपने अल्प मृत्यु के बारे में या अपनी भटकती आत्मा की शान्ति हेतु सम्बन्धित जनों को अपनी इच्छा बताता है और उसी अनुसार उसकी इच्छा पूर्ति कर उसको पुरखों के पास भेज दिया जाता है। **(पोखरिया, 1994, पृ0 68)8** अर्थात् उसकी अन्तिम क्रिया—कर्म भी किये जाते हैं।
2. **देवी—देवताओं सम्बन्धी जागर—** दूसरा देवी—देवताओं सम्बन्धी जागर होते हैं। पहला सार्वभौमिक देवी—देवता जैसे नृसिंह, हनुमान, पांडवागाथा, शिव पुराण, रामायण, देवी काली आदि। दूसरे स्थानीय देवता जैसे ग्वल, गंगनाथ, भोलानाथ, हरू, सैंम, गढ़देवी आदि और जंगली देवताओं में रमौल, ऐड़ी, परी, आंचरी, छुरमल, चौमू, बौधाण आदि आते हैं। इनके जागरों में नृत्य करने वालों में महिला, पुरूष भी हो सकते हैं।
3. **स्थानीय राजवंशों सम्बन्धी जागर—** जागरों का तीसरा प्रकार है स्थानीय शासकों के जागर जैसे— कत्यूरी, चन्द आदि स्थानीय राजवंशों की गाथायें। **(पोखरिया, 1994, पृ0 69)9**

जागर की लय तथा उनके गायन में प्रयुक्त होने वाले जागर वाद्यप्रयोगों के आधार पर जागरों को चार रूपों में विभक्त किया जाता है 1. हुड़किया जागर, हुड़के में गाया जाने वाला गद्यात्मक शैली का जागर है— इसे 'ख्याला' भी कहते हैं। 2. डमरिया (डमरूवा) जागर, इसे डमरू में गाया जाता है। 3. गड़ेली जागर, केवल थाली बजाकर गाया जाता है, 4. मुरयों जागर, झांझ, मृदंग के साथ गाया जाता है

जागर : स्वरूप, एवं सम्पादन और लोक वाद्य — जागर उत्तराखण्ड की संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसे कुमाऊँ मंडल में 'जागर' तथा गढ़वाल मंडल में 'घड़ियाला','जात' के नाम से जाना जाता है। कुमाऊँ में जागर को ढ्वाला, जागा/जगौ/बैसी, ख्याला आदि नाम से भी जाना जाता है। जागर मूल रूप से मन्दिर या घर के अन्दर लगायी जाती हैं। जागर का आयोजन किसी शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट के निवारण,

किसी सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद के निबटाने, अथवा किसी मनोकामना की पूर्ति के लिए किया जाता है। कुमाऊँ जागर का आयोजन दो रूपों में किया जाता है 1. बाहरी जागर, 2. भीतरी जागर।

1. **बाहरी जागर**– इस जागर का स्वरूप अधिक विस्तृत होता है। इसमें डँगरियों की संख्या अधिक होती है तथा इसकी कालावधि भी अधिक होती है। यह जागर दो दिन दो रात से लेकर बाईस दिन और बाईस रात तक चलता है। इस जागर के लिए नियत तिथि पर जागर गान करने वाले जगरियों तथा देवता का अवतरण करने वाले धामियों, पस्वा, डँगरियों को आमंत्रित किया जाता है तथा इससी सूचना क्षेत्र के अन्य लोगों को भी दी जाती है। जागर के लिए नियत स्थान पर एक धूनी (आग का कुण्ड) जलाई जाती है, तथा प्रतिदनि प्रातः सायं धूपबत्ती जलाकर इसकी आराधना की जाती है। धूनी के एक ओर देवता के डँगरिये के लिए एक कम्बल का आसन लगाया जाता है। तथा उसके दूसरी और दास (वाद्यवादकों) व गाथा गायकों के लिए एक स्थान नियत होता है। अन्य क्षेत्रीय लोग भी उपलब्ध स्थान पर बैठ जाते हैं। बाहरी जागर के लिए ढोल तथा नगारा, हुड़का को गाथा गायको तथा वादकों द्वारा प्रयोग किऐ जाते हैं।

2. **भीतरी जागर** – इस जागर का स्वरूप बाहरी जागर के भांति अधिक विस्तृत नहीं होता है छोटा होता है। भीतरी जागर की अवधि विषम दिन संख्या (3,5,7,9,11) के रूप में अधिक अधिक से ग्यारह दिन की होती है। इसे भ्वलनाथज्यू (भोलानाथ) का जागर भी कहा जाता है। इस जागर में वाद्यवादक ही गाथागायक होते हैं तथा कांसे की थाली अथवा हुड़का (डमरू) वाद्यों का प्रयोग होता है।
कुमाऊँ में विविध, देवी, देवताओं का जागर समय–समय पर लगता है। इनसे सम्बन्धित गीत इनके जीवन वृतान्त को आधार बनाकर गाए जाते हैं। कुमाऊँ में मुख्य रूप से ग्वल, गंगनाथ, गारेखनाथ, हरूल, सैम, ऐड़ी, कलविष्ट व अनेक देवियों के जागर लगाए जाते हैं। यहाँ पर गंगनाथ की जागर गाथा का उदाहरण स्वरूप कुछ अंश प्रस्तुत किया जा रहा है।

गंगनाथ का जागर – गंगनाथ डोटी (नेपाल) के राजवंशी राजा भवेत चन्द्र का पुत्र था। अल्मोड़ा भौन पन्त की विवाहित पुत्री भाना जोशी नामक ब्राह्मणि से गंगानाथ का प्रेम सम्बन्ध होने के कारण भना ने गर्भ धारण किया किन्तु उस समय के समाज ने इस प्रेम विवाह को असामाजिक माना और गर्भवती भाना सहित गंगनाथ की हत्या कर दी। मरणोपरान्त इन तीनों की आत्मायें भूत बनकर अल्मोड़ा के जोशियों को सताने एवं कष्ट देने लगी। इन्हे प्रसन्त एवं सन्तुष्ट रखने के लिए अनेक मन्दिरों की स्थापना की गई। घर एवं मन्दिरों में इनका पूजन कर बलि, पकवान, मिष्ठान, अंगिया, चादर, नथ, वस्त्र आदि भेंट चढ़ाए जाते हैं। गंगनाथ के जीवन एवं कार्यों की गाथा जो कुमाऊँनी भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित निम्न उदाहरण स्वरूप दिया जा रहा है :–

हैं, तब गुरू जलनधरी, गुरू मछनधरी छन, नंगा निर्बाणी छन, खड़ा तपेश्वर छन, शिवेसंयासी छन, रामे वैरागी छन......। ओ...... पड़नि संध्या का बखत में जो गुरू तीन गुरू तिलोगी नाथ छन, चार गुरू चौरंगी नाथ, बार गुरू बरभोगी नाथ, गुरू गोरखीनाथ तुमारो नाम छू। यसी संध्या काँ झुलन फैगे इजा जै तो बखत का बीच में विष्णुलोक में। जो विष्णु लोक में विष्णु नारी लक्ष्मी जो छू.....। प्यान भैरै, सिरा ढोक ल्हीनैं, प्याँ तो लोट ल्हीनै, स्वामी की आरती करनैं पड़नि संध्या बखत में। तब बिष्णु नाभि बै कमल का फूल भौं। कमल का फूल बटिक पंचमुखी ब्रह्म पैद भौं जो ब्रह्मल सृष्टि रचना करि, तीने तो ताला धरती बड़ा छी, नौ–खण्डी दिशा बड़ा छी।

हिन्दी अनुवाद – इन्हीं के बीच में भगवान शंकर के साक्षत अवतार गुरू जलन्धरनाथ, गुरू मछेन्द्रनाथ हैं। मौनधारी साधु है, नागा साधु हैं। ऐसे संध्या के समय में तीनों गुरू त्रिलोकीनाथ हैं, चारगुरू चौरंगीनाथ है, बारहो पंथों के बारह गुरू बरभोगी नाथ है। ऐसी संध्या के समय में गुरू वृहस्पति बैठे हुए है। ऐसे समय में विष्णु लोक में जलकार एवं थलकार हो गया है। विष्णु की पत्नी लक्ष्मी पाँवों में प्रणाम कर रही है और इस

तरह से स्वामी (भगवान विष्णु) की आरती कर रही है, एसे समय के बीच में भगवान विष्णु की नाभि से कमल का फूल उत्पन्न हुआ। और कमल के फूल से पंचमुखी ब्रह्मा पैदा हुए। उसी ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की। तीन तलों वाली धरती बनाई, नौ खण्ड वाली नौ दिशाएं बनाई। **(पेटशाली, 2005, पृ187–188)10**

जगरिया उपरोक पंक्तियों में समस्त देवी–देवता के अह्वान के साथ–साथ देवता गंगनाथ से प्रार्थना कर रहा है तथा उसके जन्म के बारे में तथा सृष्टि के जन्म के बारे में बखान कर रहा है।

निष्कर्ष

जागर गाथाएँ जिस रूप में वह आज उपलब्ध होती हैं उस रूप का निर्माण होने से पूर्व उन पररम्पराओं का निर्माण हुआ जो जीवन की सुख–सुविधाओं के लिहाज से गाने बजाने से ज्यादा उपयोगी थीं। देवी–देवताओं की पूजा–मनौतियाँ इन्हीं में आती हैं। वांछित मनोकामनाओं की पूर्ति, असान्न अनिष्ठ के निवारण, पशु–मवेशियों और खेती–बागबानी की सुरक्षा का 'आश्वासन' थी। इन जीवनोपयोगी 'परम्पराओं की महिमानता या फलस्तुति करते–करते 'गाथा गायन' आविष्कृत हुआ होगा जिसे जागर नाम से जाना गया। जागर गाथाओं के गायन की परिपाटियाँ, उनकी लयें, कथानकों में इश्तेमाल होने वाली रूढ़ियाँ, कत्थ्यों की पुनरावृत्तियों की प्रवृत्ति आदि से उनकी शैली पर तो ध्यान जाता ही है, उनके निर्माण के दिक् और काल भी संज्ञान में आते हैं। जिस प्रकार गाथाएँ एकाएक ही नहीं बन गई उसी प्रकार सभी गाथाएँ किसी एक कालावधि में ही रची भी नहीं गई हैं। उनकी रचना– विधि में अनके सांस्कृतिक युगों की मौजूदगी संसूचित है।**(जोशी,1973,पृ012)11** इन जागर गाथाओं का महत्त्व केवल देवता विशेष की जीवनगाथा का गान करके उसे अवतरित कराने तक ही परिसीमित न होकर इस उत्तराखण्ड प्रदेश के मध्यकालीन इतिहास एवं यहां की तत्कालीन सामाजिक स्थितियों, परिस्थितियों, जनमानस का लोक देवी देवताओं में अटूट विश्वास व अपार आस्था, प्रथा, परम्परा, समाज, संस्कार, धर्म, दुख–दर्द, रूढिवादिता, सामाजिक समस्याओं वास्तविक ज्ञान को समझने के लिए भी महत्वपर्ण हैं।

सन्दर्भ सूचीः

1. पोखरिया, देव सिंह, 1994, लोक संस्कृति के विविध आयामः मध्य हिमालय के संदर्भ में, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, पृ063।
2. पेटशाली, जुगल किशोर, 2007, उत्तरांचल के लोक वाद्य, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 57।
3. पोखरिया, देव सिंह, 1994, कुमाऊँनी लोक साहित्य एवं कुमाऊँनी साहित्य, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, पृ069
3. चातक, गोविन्द, 1990, भारतीय लोक–संस्कृति का संदर्भः मध्य हिमालय, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 245।
4. शर्मा, डी0डी0, 2011, उत्तराखण्ड के लोक देवता, अंकित प्रकाशन, पीलीकोठी हल्द्वानी, पृ0 68।
5. जोशी, प्रयाग, 1973, कुमाऊँनी लोकगाथाएँ, जगदम्बा पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृ0 10।
6. शर्मा, डी0डी0, 2011, उत्तराखण्ड के लोक देवता, अंकित प्रकाशन, पीलीकोठी हल्द्वानी, पृ0 57।
7. पोखरिया, देव सिंह, 1994, कुमाऊँनी लोक साहित्य एवं कुमाऊँनी साहित्य, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, पृ068।
8. पोखरिया, देव सिंह, 1994, कुमाऊँनी लोक साहित्य एवं कुमाऊँनी साहित्य, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, पृ069।
9. पोखरिया, देव सिंह, 1994, कुमाऊँनी लोक साहित्य एवं कुमाऊँनी साहित्य, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा, पृ069।

10.पेटशाली, जुगल किशोर, 2005, कुमाऊँ की लोकगाथाएँ, उत्तरांचल लोक–कला एवं साहित्य संरक्षण समिति चितई प्रकाशन, अल्मोड़ा, पृ0 187–188।

11.जोशी, प्रयाग, 1973, कुमाऊँनी लोकगाथाएँ, जगदम्बा पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृ0 12।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. उपाध्याय, उर्बादत्त, 1979, कुमाऊँनी लोक गाथाओं का साहित्यिक और सांस्कृतिक लोक अध्ययन, प्रकाश बुक डिपा, बरेली।
2. चातक, गोविन्द, 1990, भारतीय लोक–संस्कृति का संदर्भः मध्य हिमालय, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. जोशी, प्रयाग, 1994, कुमाऊँनी लोकगाथाएँ, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
4. जोशी, प्रयाग, 1974, कुमाऊँनी लोकगाथाएँ, जुगल किशोर एण्ड कम्पनी, देहरादून।
5. जोशी, कृष्णानन्द, 1971, रमोल (कुमाऊँ की लोकगाथा), प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
6. नोटियाल, शिवानन्द, उत्तराखण्ड की लोक गाथाएँ, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
7. पाण्डे, बी0डी0, 1990, कुमाऊँ का इतिहास, श्याम प्रकाशन, अल्मोड़ा।
8. पाण्डे, त्रिलोचन, 1979, कुमाऊँ का लोक साहित्य, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
9. पेटशाली, जुगल किशोर, 2002, उत्तरांचल के लोक वाद्य, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. पेटशाली, जुगल किशोर, 2005, कुमाऊँ की लोकगाथाएँ, उत्तरांचल लोक–कला एवं साहित्य संरक्षण समिति चितई प्रकाशन, अल्मोड़ा।
11. पोखरिया, देव सिंह, 2000, कुमाऊँनी संस्कृति, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
12. पोखरिया, देव सिंह, 1994, कुमाऊँनी लोक साहित्य और कुमाऊँनी साहित्य, अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा।
13. पंत, मोहन चन्द्र, 1993, कुमाऊँनी लोक गाथाओं का इतिहास, ग्रथायन सर्वोदय नगर, अलीगढ़।
14. भट्ट, मदन, 2002, कुमाऊँ की जागर कथायें, श्री साईं प्रिंटर्स, हल्द्वानी।
15. मटियानी, शैलेश, 1958, कुमाऊँ की लोक कथायें, आत्मा राम एण्ड संन्स, नई दिल्ली।
16. शर्मा, डी0डी0, 2006, उत्तराखण्ड के लोकदेवता, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।
17. साह, ईला, 2010, कुमाऊँनी लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्यय, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।
18. अधिकारी, पूरन सिंह, 2006 मौखिक परम्पराओं मं प्रतिबिम्बित सामाजिक व आर्थिक जीवनः एक ऐतिहासिक अध्ययन, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।

*Corresponding author.
E-mail address: jagmohan.pargine@gmail.com